आशूरा की फज़ीलत
नया वर्ष और आत्म-निरीक्षण

[*हिन्दी*]

فضل يوم عاشوراء ويليه العام الجديد ومحاسبة النفس

[اللغة الهندية]

संकलन

वैज्ञानिक अनुसन्धा, दारूल-क़ासिम

القسم العلمي بدار القاسم

अनुवाद

अताउर्रहमान ज़ियाउल्लाह

ترجمة: عطاء الرحمن ضياء الله

المكتب التعاوني للدعوة وتوعية الجاليات بالربوة

الرياض - المملكة العربية السعودية

इस्लामी आमन्त्रण एंव निर्देश कार्यालय रब्वा, रियाज़, सऊदी अरब

1429 - 2008

islamhouse.com

بسم الله الرحمن الرحيم

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

मैं अति मेहरबान और दयालु अल्लाह के नाम से आरम्भ करता हूँ।

الحمد لله رب العالمين، والصلاة والسلام على اشرف الأنبياء والمرسلين، نبينا محمد وعلى آله وصحبه أجمعين، و بعد:

हर प्रकार की प्रशंसा सर्व संसार के पालनहार अल्लाह के लिए योग्य है, तथा अल्लाह की कृपा और शान्ति अवतरित हो सर्वश्रेष्ठ पैग़म्बर मुहम्मद सललल्लाहु अलैहि व सल्लम, आप की संतान और आप के समस्त साथियों पर।

अल्लाह तआला का अपने बन्दों पर एक बड़ा उपकार और उपहार यह भी है कि उन पर एक के बाद एक नेकियो के मौसम आते रहते हैं, ताकि उन्हें भर पूर बदला और अज्र व सवाब प्रदान करे और उन्हें अपने अधिक अनुकम्पा और कृपा से सम्मानित करे। चुनाँचे हज्ज का पवित्र मौसम बीतते ही एक प्रतिष्ठित महीना आ गया, और वह है अल्लाह का हुरमत वाला महीना मुहर्रम। इमाम मुस्लिम ने अपनी सहीह में अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है कि वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से रिवायत करते हैं कि आप ने फरमाया : **"रमज़ान के महीने के बाद सब से श्रेष्ठ रोज़े अल्लाह के महीना के हैं जिसे तुम मुहर्रम कहते हो, और फर्ज़ नमाज़ के बाद सर्वश्रेष्ठ नमाज़ रात की नमाज़ है।"**

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुहर्रम को अल्लाह का महीना बताया है, जिस से इस महीने की महानता और प्रतिष्ठा का पता चलता है, क्योंकि अल्लाह तआला अपनी कुछ मख्लूक़ को कुछ विशेषताओं से सम्मानित करता और कुछ को कुछ पर प्रतिष्ठा और वरीयता प्रदान करता है।

हसन बसरी -रहिमहुल्लाह- फरमाते हैं : "अल्लाह तआला ने साल का आरम्भ एक हराम महीने से किया है और उसका अन्त भी एक हराम महीने से किया है, अतः

रमज़ान के महीने के बाद साल में इस महीने से बढ़कर सख्त हुरमत वाला कोई अन्य महीना नहीं है।''

इस महीने में एक दिन ऐसा है जिस में एक महान घटना घटी और एक स्पष्ट विजय प्राप्त हुआ, जिस में स्पष्ट रूप से सत्य असत्य पर गालिब आ गया, क्योंकि अल्लाह तआला ने मूसा अलैहिस्सलाम और उनकी क़ौम को मुक्ति (नजात) प्रदान किया, तथा फिर्औन और उसकी क़ौम को डुबा दिया। अतः यह एक ऐसा दिन है जिसकी बहुत अधिक प्रतिष्ठा है और इसकी हुर्मत बहुत पुरानी है, यह अल्लाह के महीने मुहर्रम का दसवाँ दिन है जिसे आशूरा के दिन के नाम से जाना जाता है।

आशूरा के दिन और उसके रोज़े की फज़ीलत :

आशूरा के दिन और उसके रोज़े की फज़ीलत में बहुत सारी हदीसें आई हैं और यह नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से साबित हैं, उनमें से उदाहरण के तौर पर निम्न हदीसों का हम यहाँ उल्लेख कर रहे हैं :

सहीहैन (बुख़ारी व मुस्लिम) में इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से वर्णित है कि उन से आशूरा के दिन के बारे में पूछा गया तो उन्हों ने फरमाया : **''मैं ने अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को आशूरा के दिन और रमज़ान के महीने के अतिरिक्त किसी अन्य दिन को दूसरे दिनों से अफज़ल जान कर रोज़ा रखते हुए नहीं देखा।''**

जैसाकि हम पहले उल्लेख कर चुके हैं कि आशूरा के दिन की बड़ी फज़ीलत और महत्व है और उसकी हुरमत बहुत पुरानी है, और मूसा अलैहिस्सलाम इस दिन इसकी फज़ीलत के कारण रोज़ा रखते थे। केवल यही नहीं बल्कि अहले किताब (यहूद व नसारा) भी इस दिन रोज़ा रखते थे, इसी प्रकार जाहिलयत के समय काल में कुरैश भी इस दिन रोज़ा रखते थे।

अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मक्का में आशूरा के दिन का रोज़ा रखते थे लेकिन लोगों को इस का आदेश नहीं देते थे। जब आप मदीना आए और अहले किताब को आशूरा का रोज़ा रखते और इस दिन की ताज़ीम करते हुए देखा, और आप को जि चीज़ का आदेश नहीं दिया गया था उस में उनकी मुवाफक़त को पसन्द करते थे, अतः आप ने इस दिन का स्वयं रोज़ा रखा और लोगाों को भी इसका रोज़ा रखने का आदेश दिया। तथा आप ने इस दिन के रोज़े पर ज़ोर दिया और इस पर उभारा, यहाँ तक कि लोग अपने बच्चों तक को भी इस दिन का रोज़ा रखवाते थे। सहीहैन में इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है कि उन्हों ने कहा : **"अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मदीना आए, तो यहूद को आशूरा के दिन रोज़ा रखते हुए पाया। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन से कहा : "यह कैसा दिन है जिस का तुम रोज़ा रखते हो?" उन्हों ने कहा : यह एक महान दिन है, जिस में अल्लाह तआला ने मूसा अलैहिस्सलाम और उनकी क़ौम को नजात प्रदान की, और फिर्औन और उसकी क़ौम को डुबा दिया, तो मूसा अलैहिस्सलाम ने अल्लाह का शुक्र अदा करते हूए इस दिन रोज़ा रखा, इसलिए हम भी रोज़ा रखते है। इस पर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : "हम मूसा अलैहिस्सलाम (की पैरवी) के तुम से अधिक योग्य और हक़दार है।" फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस दिन रोज़ा रखा और लोगों को भी इसका आदेश दिया।"**

तथा सहीहैन में रुबैइअ् बिन्त मुअव्विज़ से रिवायत है वह कहती हैं कि : "आशूरा की सुब्ह अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मदीना के इर्द गिर्द अन्सार की बस्तियों **में यह सन्देश भेजा : "तुम में से जिस ने रोज़ा की हालत में सुब्ह की है वह अपना रोज़ा पूरा करे, और तुम में से जिस ने रोज़ा न रखते हुए सुब्ह की है वह अपना अवशेष दिन रोज़ा की हालत में बिताए।" चुनाँचे इस के बाद हम रोज़ा रखते थे और अपने छोटे बच्चों को भी रोज़ा रखवाते थे, और उन्हे**

मस्जिद लेकर जाते थे, और उनके लिए रंग-बिरंगे कपड़ों का खिलौना तैयार करते थे, जब उन में से कोई बच्चा खाने के लिए रोता तो हम उसे वह खिलौना दे देते थे यहाँ तक कि रोज़ा खोलने का समय हो जाता था।" तथा एक रिवायत के शल्द इस प्रकार हैं : **"जब वो हम से खाना माँगते तो हम उन्हें खिलौने देकर बहलाए रखते यहाँ तक कि वो अपना रोज़ा पूरा कर लेते।"**

जब रमज़ान के महीने के रोज़े फर्ज़ हुए तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम को आशूरा के दिन रोज़ा रखने का आदेश देना और उस पर ज़ोर देना छोड़ दिया। सहीहैन में इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है कि उन्होंने कहा : "अल्लाह के पैग़म्बर **सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने आशूरा के दिन का रोज़ा रखा और उस दिन का रोज़ा रखने का आदेश दिया। जब रमज़ान के रोज़े फर्ज़ किए गए तो आप ने इसे छोड़ दिया।**" अर्थात् इसका आदेश देना बन्द कर दिया और उसका इस्तिहबाब शेष रहा। तथा सहीहैन में मुआवियह रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि उन्हों ने कहा कि मैं ने अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को फरमाते हुए सूना : **"यह आशूरा का दिन है, और अल्लाह तआला ने इस दिन का रोज़ा तुम पर फर्ज़ नहीं किया है, और मैं रोज़े से हूँ। अतः तुम में से जो चाहे रोज़ा रखे और जो चाहे रोज़ा न रखे।"** यह हदीस इस बात का प्रमाण है कि इसकी अनिवार्यता निरस्त कर दी गई और इस्तिहबाब बरक़रार है।

अल्लाह के महीने मुहर्रम की फज़ीलतों में से यह भी है कि आशूरा के दिन का रोज़ा पिछले एक साल के गुनाहों को मिटा देता है। इमाम मुस्लिम ने अपनी सहीह में अबू क़तादह रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है कि एक आदमी ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से आशूरा के दिन के रोज़े के बारे में पूछा तो आप ने फरमाया : **"मुझे अल्लाह अताला से आशा है कि यह पिछले साल के गुनाहों के मिटा देगा।"**

मेरे मुसलमान भाईयो ... और मुसलमान बहनो !

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपनी आयु के अन्त में इस बात का संकल्प किया था कि आप अकेले आशूरा के दिन का रोज़ा नहीं रखें गे, बल्कि उसके साथ एक और दिन भी मिला लें गे; ताकि उसके रोज़े में यहूद व नसारा की मुख़ालफत हो सके। चुनाँचे सहीह मुस्लिम में इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है कि उन्हों ने कहा : "जब अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने आशूरा के दिन का रोज़ा रखा और उसके रोज़ा का हुक्म दिया तो लोगों ने कहा : ऐ अल्लाह के पैग़म्बर! यह ऐसा दिन है जिसकी यहूद व नसारा ताज़ीम करते हैं, तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ले फरमाया : **"जब अगला साल आए गा तो अल्लाह ने चाहा तो हम नवें दिन का भी रोज़ा रखें गे।"** (अर्थात् यहूद व नसारा की मुख़ालफत करते हुए मुहर्रम के दसवें दिन के साथ नवें दिन का भी रोज़ा रखें गे) वह कहते हैं : **"अगला साल आने से पहले ही आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का स्वर्गवास हो गया।"**

अल्लामा इब्ने क़ैइम रहिमहुल्लाह ज़ादुल मआद (२/७६) में फरमाते हैं:

"आशूरा के रोज़े की तीन श्रेणियाँ हैं: सब से सम्पूर्ण श्रेणी यह है कि: उस से एक दिन पहले और उसके एक दिन बाद का भी रोज़ा रखा जाए (अर्थात ९, १० और ११ मुहर्रम का रोज़ा रखा जाए) उसके बाद की श्रेणी यह है कि ९ और १० मुहर्रम का रोज़ा रखा जाए, और अधिकांश हदीसों में इसी का उल्लेख है, अन्तिम श्रेणी यह है कि केवल १० मुहर्रम का रोज़ा रखा जाए।"

एहतियात और सावधानी का पहलू यह है कि ९, १० और ११ मुहर्रम का रोज़ा रखा जाए; ताकि आदमी आशूरा के दिन के रोज़े को पा ले।

नया वर्ष और आत्म–निरीक्षण :

नये हिजरी वर्ष (इस्लामी साल) के प्रारम्भ पर एक मुसलमान के लिए अतियोग्य है कि वह अपनी आत्मा का शीघ्र निरीक्षण, सूक्ष्म पुनरअवलोकन (जाँच और परख) करे। क्योंकि इस आत्म निरीक्षण में मुक्ति का मार्ग और हिदायत का रास्ता है, अतः बुद्धिमान आदमी वह है जो अपने नफ्स का मुहासबा करे और मृत्यु के बाद के लिए कार्य करे, तथा सचेत और दूरदर्शी व्यक्ति वह है जो अपने ऊपर भलाई के मार्ग को लाज़िम कर ले और अपने नफ्स को शरीअत की लगाम लगा दे।

मनुष्य दो हालतों से खाली नहीं होता, यदि वह सदाचारी है और नेकी करने वाला है तो वह भलाई और नेकी के अन्दर और अधिक बढ़ जाए गा, और यदि वह कोताही करने वाला है तो वह अपने ऊपर लज्जित और शर्मिन्दा होकर अल्लाह से तौबा करेगा, अल्लाह तआला का फरमान है :

﴿ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَلْتَنظُرْ نَفْسٌ مَّا قَدَّمَتْ لِغَدٍ ﴾ [الحشر:١٨].

"ऐ ईमान वालो ! अल्लाह से डरो, और एक प्राणी को यह देखना चाहिए कि उसने आने वाले कल (प्रलोक) के लिए क्या (कार्य) आगे बढ़ाया है।" (सूरतुल हश्र :१८)

इब्ने कसीर रहिमहुल्लाह इस आयत की तफ्सीर में फरमाते हैं : **"अर्थात अपने नफ्स का जाँच-परताल और निरीक्षण करो इस से पहले कि तुम्हारा हिसाब लिया जाए, और देखो कि तुम ने कल क़ियामत के लिए और अपने पालनहार के सामने पेश किए जाने के दिन के लिए क्या नेक आमाल एकत्र कर के रखे हैं।"**

अल्लामा इब्ने क़ैइम रहिमहुल्लाह ने आत्म निरीक्षण के ढंग और उसकी विधि को संछिप्त में इस प्रकार बयान किया है : **"आदमी सर्व प्रथम फराईज़ पर अपने आप को जाँचे और परखे, यदि उसे उसमे कोई कमी और त्रुटि का पता चले तो उसकी क़ज़ा या सुधार करके उसकी छतिपूर्ति (तलाफी) करे, फिर निषिध चीज़ों पर अपने**

नफ्स का मुहासबा करे, यदि उसे ज्ञात हो कि उसने कोई निषिध काम किया है तो तौबा (क्षमा याचना), इस्तिग़फार और गुनाहों को मिटाने वाली नेकियों के द्वारा उस की छतिपूर्ति (तलाफी) करे, फिर गफलत पर अपने नफ्स का निरीक्षण करे, अगर वह उस चीज़ से गाफिल था जिसके लिए उसे पैदा किया गया है तो वह ज़िक्र व अज़्कार और अल्लाह की ओर ध्यान मग्न करके उस की छतिपूर्ति (तलाफी) करे।''

अतः मेरे मुसलमान भाई! इस नये वर्ष की फज्र (प्रभात) के उदय होने के साथ तौबा करने और अल्लाह की ओर मुतवज्जेह होने में शीघ्रता करें, क्योंकि आप (के आमाल) का रजिस्टर बिल्कुल सफेद है उसमें अभी कुछ भी लिखा नहीं गया है। अतः उसे गुनाहों और नाफरमानियों के द्वारा काला करने से अल्लाह से डरें। अपने नफ्स का हिसाब और उसकी जाँच-परख करें इस से पहले कि आप का हिसाब व किताब हो, अधिक से अधिक अल्लाह तआला का ज़िक्र और इस्तिग़फार करें, ऐसे नेक लोगों की संगति अपनाने के इच्छुक बनें जो भलाई पर आपका मार्ग दर्शन करें।

अल्लाह तआला से दुआ है कि इस वर्ष को इस्लाम और मुसलमानों के लिए खैर व भलाई का साल बनाए, अपनी सुआराधना और अच्छी तरह आज्ञापालन करने पर और अपनी अवज्ञा व नाफरमानी से दूर रहने पर हमारी आयु लम्बी करे, और हमें उन लोगों में से कर दे जिनका ठिकाना स्वर्ग के ऐसे कमरे हैं जिनके नीचे नहरें बहती हैं। अल्लाह की दया व कृपा और शन्ति अवतरित हो हमारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम, आप की सन्तान तथा आपके साथियों और सहयोगियों पर।

अनुवादक
(अताउर्रहमान ज़ियाउल्लाह)*
atazia75@gmail.com